द्वितीय अध्याय

जीवनीपरक उपन्यासकार 'डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर' : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

द्वितीय अध्याय

जीवनीपरक उपन्यासकार 'डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व

विषय प्रवेश -

2.1 व्यक्तित्त्व

2.1.1 स्थूल जीवन रेखाएँ

2.1.2 व्यक्तित्त्व की विशेषताएँ

2.2 कृतित्त्व

2.2.1 उपन्यास

2.2.2 शैक्षिक उपन्यास

2.2.3 सामाजिक उपन्यास

2.2.4 राजनीतिक उपन्यास

2.2.5 कहानी संकलन

2.2.6 ऐतिहासिक नाटक

2.3.7 अन्य नाटक

2.3.8 आलोचना साहित्य

2.3.9 विचार साहित्य

2.2.10 बाल साहित्य

2.2.11 काव्य साहित्य

2.2.12 संपादन

2.2.13 अनुवाद

2.2.14 अन्य

2.2.15 अंग्रेजी साहित्य

2.3 पुरस्कार

निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय

जीवनीपरक उपन्यासकार 'डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर' : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

विषय प्रवेश :

मेरे शोध-प्रबंध की मार्गदर्शिका डॉ. आर. आर. मुल्ला मॅडम जी के प्रोत्साहन से मेरी राजस्थान यात्रा संपन्न हुई। तब मुझे राजेंद्रमोहन भटनागर जी से साक्षात्कार का अवसर मिला। साक्षात्कार का हेतु उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व की जानकारी लेना था। अतः जब साक्षात्कार का कार्य संपन्न हुआ तो मुझे एक व्यक्ति की अपेक्षा एक समग्र जीवन-दर्शन से रू-ब-रू होने का अनुभव मिला।

सादगीपूर्ण जीवनयापन करनेवाले भटनागर जी को मैंने साहित्य व जीवन के 'मौन साधक' के रूप में पाया। आंबेडकर, सुभाषचंद्र, विवेकानंद, मीराबाई, राणा प्रताप, गांधी जैसे युगपुरुषों के जीवन संग्राम को अपनी लेखनी द्वारा उजागर करनेवाले भटनागर जी की जीवन-यात्रा भी अनेकानेक पडावों से गुजरती हुई उसी महानता को प्राप्त हुई है। उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व को हम विस्तार से देखेंगे।

2.1 व्यक्तित्त्व :

मानव जीवन में अनेक संस्कार जन्म, परिस्थितिजन्य एवं शिक्षाजन्य प्रभाव से परिलक्षित होते हैं। इस दृष्टि से व्यक्तित्त्व के निर्माण में जीवनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वास्तव में जब व्यक्तित्त्व का आधार दृढ़ बन जाता है, तब उसका जीवनपर प्रभाव पड़ता है। डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी का व्यक्तित्त्व भी निष्ठावान अध्येता एवं साहित्यकार के रूप में सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ है।

2.2.1 स्थूल जीवन रेखाएँ[1] :

1. जन्म :

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी का जन्म अंबाला कैंट (हरियाणा) में 07 मार्च, 1937 में हुआ।

---

1. राजेंद्रमोहन भटनागर जी से प्रत्यक्ष साक्षात्कार के आधार पर।

2. माता-पिता :

डॉ. भटनागर जी के पिता श्री. ब्रजमोहनलाल भटनागर हैं। भटनागर जी की माता का नाम श्रीमती ब्रजरानी भटनागर हैं। पिताजी जमींदार थे तथा माताजी धार्मिक एवं संवेदनशील वृत्ति की थी।

3. पालन-पोषण :

भटनागर की माताजी घर की अनबन के कारण अलग-से रहती थी। भटनागर जी के बचपन में उनके भरण-पोषण की पूरी जिम्मेदारी उनकी माताजी ने ही उठाई। अत: स्वावलंबन, कर्मठता, मेहनतकशी, संवेदनशीलता जैसे संस्कार उन्हें अपनी माँ से विरासत स्वरूप मिले।

4. शिक्षा :

भटनागर की शिक्षा मुफीद इंटरमिडिएट कॉलेज, एम. डी. जैन और सेंट जोन्स कॉलेज आग्रा में हुई। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. किया। साथ ही आचार्य, साहित्यरत्न, पीएच्. डी. तथा डी. लिट्. की उपाधियाँ भी यथावकाश प्राप्त की।

5. यौवन :

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी का यौवन बड़े साहित्यिक परिवेश में गुजरा। पढ़ाई के दरम्यान उन्हें रामविलास शर्मा, गुलाबराय, उपेंद्रनाथ 'अश्क', काका कालेलकर, यशपाल, जैनेंद्र कुमार, अमृतलाल नागर, डॉ. कमलेश इ. साहित्य प्रेमियों का सहवास मिला। अपनी पढ़ाई के समय उन्होंने अनेक छोटे-बड़े काम करके जीवन यापन किया।

6. विवाह :

भटनागर जी का विवाह मई, 1963 में लखनऊ की शशी जी के साथ हुआ। इनकी पाँच संताने हैं। दो पुत्र नवनीव तथा पंकज और तीन पुत्रियाँ नीरू, नीलम तथा प्रमिला हैं।

7. जीविकोपार्जन :

डॉ. भटनागर राजस्थान विश्वविद्यालय में लेक्चरर रह चुके हैं। वे ज्यादातर स्वतंत्रजीवी रहे हैं। उन्होंने स्वतंत्र रूप से शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धि-परक अनेक कार्य किए हैं। उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र है साहित्य-सृजन। 1953 में उनकी पहली कहानी 'समाज फाँसी पर' आँसू नामक पत्रिका में छपी। तब से लेकर आज तक अविरत, निरंतर रूप में लिखते जा रहे हैं।

8. अन्य रूचियाँ :

डॉ. भटनागर जी कॉलेज के जीवन में क्रिकेट और बॅडमिंटन के अच्छे खिलाड़ी रह चुके है। इसके अलावा पेंटिंग एवं खाना बनाने में भी उन्हें आनंद आता है। यात्रा, भ्रमण करना उनको अच्छा लगता है।

2.1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

1. आकृति एवं वेशभूषा :

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी साधारण आकृति, गेहू वर्ण एवं मध्यम कद के व्यक्ति हैं। शांत मुखमंडल एवं घनगंभीर गहरी आँखों के कारण वह आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी हैं। उनका उन्नत ललाट तथा जिज्ञासु आँखे बाहरी व्यक्तित्व को अधिक उज्ज्वल बनाते हैं।

वे हमेशा साधारण वेशभूषा पहनना पसंद करते हैं। उन्हें कुर्ता-पायजामा, पेंट कमीज पहनना पसंद है।

2. रहन-सहन एवं विचार :

उनका रहन-सहन सादगीभरा एवं शांतिपूर्ण है। वे तड़क-भड़क को पसंद नहीं करते। गहन विचारशीलता उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। इस संदर्भ में वे प्रेमचंद और जैनेंद्र से प्रभावित है। वे विचारों की पारदर्शिकता एवं व्यावहारिकता के पक्षधर है। अपनी बीमार पत्नी की सेवा में वे हमेशा तत्पर रहते हैं। उनके जीवन में सेवाधर्म को सबसे ज्यादा महत्त्व है।

3. कर्मठता एवं सहिष्णुता :

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी आज के समय में ढलती उम्र में भी दिन में 12 से 14 घंटे काम में व्यस्त रहते हैं। वे एकांतप्रिय हैं। वे आलस्य को शत्रू मानते है। भटनागर जी हर एक धर्म के साथ मानव धर्म में विश्वास रखते है। उनका वर्तमान जन्म में विश्वास है। जीवदया को ही वे ब्रह्मसेवा मानते हैं।

4. सामाजिकता :

डॉ. भटनागर जी समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। समाज के कल्याण के लिए हर संभव तरिके से सहयोग देते हैं। इनका साहित्य इनकी सामाजिकता का दर्पण है। समाज के हर पिछडे वर्ग के प्रति फिर वो चाहे किसी धर्म, समाज, वर्ग, जात, समुदाय से क्यों न हो कृतिशील सहानुभूति रखते हैं। उनमें दिखावे की वृत्ति बिलकूल नहीं है।

5. भाषा पर अधिकार :

उनका भाषा पर जबरदस्त अधिकार है। वे अंग्रेजी तथा हिंदी के ज्ञाता है। इसके अतिरिक्त उन्हें गुजराती भाषा का भी ज्ञान है।

2.2 कृतित्व :

व्यक्तित्व का प्रभाव ही कृतित्व पर पड़ता है। सच्चा रचनात्मक पुरुषार्थ विषम परिस्थितियों में भी अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा नई राह खोजता है। डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी ऐसे ही सच्चे पुरुषार्थी रचनाकारों में से हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने अंधकार से ज्योति की ओर जाने का हर संभव प्रयास किया है। वर्तमान परिवेश में जब मानवीय संवेदनाओं के लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है, ऐसे में डॉ. भटनागरजी ने अपनी समस्त रचनाओं में मानवीय मूल्यों को उजागर किया है। डॉ. भटनागरजी की रचनात्मक प्रतिभा कहानी, उपन्यास, नाटक और आलोचनात्मक साहित्य-सृजन के माध्यम से परिलक्षित होती है।

डॉ. भटनागर जी के साहित्य-सृजन के प्रेरणास्त्रोत व्यक्ति के रूप में यशपाल और प्रेमचंद हैं। इसके अलावा उनका अपना कठिनतम परिस्थितियों में गुजारा गया जीवन तथा आम आदमी सबसे बड़े प्रेरणास्त्रोत सिद्ध हुए हैं। डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी द्वारा विरचित बहुआयामी साहित्यिक कृतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

उपजीव्य ग्रंथ :

'विवेकानन्द' (जीवनीपरक उपन्यास) - 'विवेकानन्द' उपन्यास का प्रथम संस्करण 2003, यशपाल एण्ड सन्स, कश्मिरी गेट, दिल्ली, से प्रकाशित है। 'विवेकानन्द' उपन्यास में डॉ. भटनागर जी ने ''नवजागरण के अग्रदूत, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्वाधिनता के प्रेणता स्वामी विवेकानन्द के जीवन को पन्नों में समेटा है। 'विवेकानन्द' जीवनी साहित्य के अंतर्गत लिखा गया सांस्कृतिक उपन्यास है।''[1] स्वामीजी के जीवन की सच्चाई की तह तक जाने के लिए लेखक ने उन सारे स्थानों की यात्रा की जहाँ-जहाँ स्वामीजी गए थे। स्वामीजी और तमाम दूसरे पात्रों के रूप-रंग और बातचीत के साथ माहौल का सजीव वर्णन करके लेखक ने पूरी कोशिश की है कि पाठक उपन्यास पढ़ते हुए उसी कालखंड में जा पहुँचे।

---

1. विवेकानन्द उपन्यास, मलपृष्ठ।

प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा लेखक ने महापुरुष विवेकानन्द के जीवन की छोटी-बड़ी घटनाओं के साथ विकसित दार्शनिकता के महत्त्व को स्थापित किया है।

अन्य साहित्यिक विधाएँ[1] :-

2.2.1 उपन्यास

*** महाराणा प्रताप पर :**

1. नीले घोड़े का सवार : 1984, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
2. एक अंतहीन युद्ध : 1985, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. एकलिंग का दिवान : 2001, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. सूर्यवंश का प्रताप : 2006, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

*** मीराबाई पर :**

5. प्रेम दिवानी : 1994, आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली।
6. जोगिन : 1997, मॉडर्न बुक डेपो, जयपुर।
7. श्याम प्रिया : 1998, राजेश प्रकाशन, दिल्ली।
8. न गोपी : न राधा : 1998, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

*** स्वामी विवेकानन्द पर :**

9. तरूण संन्यासी : 2001, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
10. विवेकानन्द : 2003, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

*** सुभाषचंद्र बोस पर :**

11. दिल्ली चलो : 1997, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

*** 1942 की क्रांती पर :**

12. स्वराज : 2001, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली।

*** सूरदास पर :**

1. सूरश्याम : 1978, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. अमृतघट : (सूरश्याम का संशोधिक संस्करण) 2003, इरावती प्रकाशन, नई दिल्ली।

---

1. डॉ. भटनागर जी से प्राप्त सामग्री के आधार पर।

✱ **महात्मा गांधी पर :**

15. अंतिम सत्याग्रही : 1997, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली।

16. कुली बैरिस्टर : 2009, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

✱ **महाराणा कुम्भा पर :**

17. राज राजेश्वर : 1992, रजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

✱ **रहिम और उनकी पत्नी पर :**

18. महाबानो : 1986, किताब घर, नई दिल्ली।

✱ **कबीर पर :**

19. महात्मा : 1979, दी स्ट्रेंटस बुक कंपनी, जयपुर।

✱ **अम्बेडकर पर :**

20. युगपुरुष अम्बेडकर : 1994, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

✱ **सरदार वल्लभभाई पटेल पर :**

21. सरदार : 2000, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

22. वह चाणक्य था : 2005, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

✱ **बॅ. जिन्ना पर :**

23. कायदेआजम : 2006, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

✱ **एकलव्य पर :**

24. दंश : 2009, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

✱ **भरतपूर के राजकुमार जवाहर और उनकी प्रेमिका पर :**

25. गन्ना बेगम : 1986, राजेश प्रकाशन, दिल्ली।

✱ **भक्तिकाल पर :**

26. वसुधा : 1986, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

27. सिद्ध पुरुष : 1987, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

✱ **इंदिरा गांधी पर :**

28. अतीत होते वसंत : 2006, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

✱ **सोनिया गांधी पर :**

29. परछाईयाँ : 2006, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

✱ **चैतन्य महाप्रभु पर :**

30. गौरांग : 2009, सन्मार्ग प्रकाशन, कलकत्ता।

✱ **राममनोहर लोहिया पर :**

31. अवधुत लोहिया : 2010, सन्मार्ग प्रकाशन, कलकत्ता।

2.2.2 शैक्षिक उपन्यास :

1. छात्र नेता : 1974, आरती पॉकेट बुक्स, मेरठ।
2. अफसर का बेटा : 1978, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
3. कागज की नाव : 1981, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
4. विकल्प : 1984, अलंकार प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सर्वोदय : 1986, पितांबर पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. सत्यमेव जयते : 1986, पितांबर पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. तमसो मां ज्योतिर्गमय : 1987, पितांबर पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. माटी की पुकार : 2004, पितांबर पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. वैलेन्टाइन डे : 2004, पितांबर पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

2.2.3 सामाजिक उपन्यास :

1. अनंत आकाश : 1979, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली।
2. मोनालिसा : 1981, अंकुर प्रकाशन, दिल्ली।
3. एक ठहरी हुई रात : 1981, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
4. देवलीना : 1982, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सन्तो : 1989, राजेश प्रकाशन, दिल्ली।
6. जिन्दगी का अहसास : 1990, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
7. परिधि : 1990, विनोद प्रकाशन, आगरा।
8. वाग्देवी : 1992, कृष्णा ब्रदर्स प्रकाशन, अजमेर।

9. माटी की गंध : 1992, विनोद प्रकाशन, आगरा।
10. रिश्तों का दर्द : 1992, ग्रहशोभा प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. अंदर की आग : 1992, समानान्तर प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. कुहरा : 1996, संजीव प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. ब्रह्म-कमल : 1997, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली।
14. शुभ प्रभात : 1997, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
15. मांग का सिंदूर : 1997, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली।
16. सबक : 2003, सुयोग्य प्रकाशन, नई दिल्ली।

2.2.4 राजनीतिक उपन्यास :

1. मंच नायक : 1978, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. दहशत : 1978, सुन्दर साहित्यसदन, नई दिल्ली।
3. नया मसीहा : 1979, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. घाटियाँ गूँजती है : 1980, अरूण प्रकाशन, दिल्ली।
5. रिवोल्ट : 1993, किरण प्रकाशन, अजमेर।

*** हिंदी का प्रथम सैलानी उपन्यास :**

1. ग़ज़ल : 2004, इंडियन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स लिमिटेड, दिल्ली।

2.2.5 कहानी संकलन :

1. मोम की ऊँगलियाँ : 1967, अंतरदेशिय प्रकाशन, आगरा।
2. आधुनिक कहानियाँ : 1968, अंतरदेशिय प्रकाशन, आगरा।
3. गौरैया : 1978, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
4. एक टूकड़ा धूप : 1985, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली।
5. सप्तकिरण : 1991, विनोद प्रकाशन मंदीर, आगरा।
6. चाणक्य की हार : 1993, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
7. थामली : 1997, सुंदर साहित्य सदन, नई दिल्ली।
8. अंजाम : 1998, नितिका प्रकाशन, दिल्ली।
9. आज की ताजा ख़बर : 2011, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

2.2.6 ऐतिहासिक नाटक :

* **मीराबाई पर :**

1. मीरा : 1979, गाडोदिया प्रकाशन, बिकानेर।

* **कर्ण पर :**

2. सारथी पुत्र : 1983, विनोद प्रकाशन, आगरा।

* **आपातकाल पर :**

3. माटी कहे कुम्हार से : 1983, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

* **महात्मा बुद्ध पर :**

4. महाप्रयाण : 1986, पितांबर प्रकाशन, नई दिल्ली।

* **सूर्य और कुंती पर :**

5. सूर्याणी : 1987, गाडोदिया प्रकाशन, बिकानेर।

* **स्वतंत्रता आंदोलन पर :**

6. ताम्रपत्र : 1993, किरण प्रकाशन, अजमेर।

* **महाराणा प्रताप पर :**

7. संध्या का भोर : 1995, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

* **सुभाषचंद्र बोस पर :**

8. शताब्दी पुरुष : 1999, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. अगस्त क्रांति : 2002, ओरिएंट लौंगमेन प्रा. लि., नई दिल्ली।

2.2.7 अन्य नाटक :

1. वक्त की आवाज : 1970, वर्मा ब्रदर्स, भरतपुर।
2. नायिका : 1979, दिनेश प्रकाशन, बिकानेर।
3. भोमरदेव : 1989, वर्मा ब्रदर्स, भरतपुर।
4. आधी आजादी : आधी गुलामी : 1997, भारत पब्लिकेशन, आगरा।

2.2.8 आलोचना - साहित्य :

1. केशवदास एक अध्ययन : 1956, ज्ञानबुक डेपो, मेरठ।

BARR. BALASAHEB ... SHIVAJI UNIVERSITY ...

2. आचार्य केशवदास : 1957, विनोद प्रकाशन, आगरा।
3. बाणभट्ट की आत्मकथा : एक अध्ययन : 1964, विनोद प्रकाशन, आगरा।
4. जैनेंद्र और उनका निबंध साहित्य : 1978, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. जैनेंद्र और उनके निबंधों का नवमुल्यांकन : 1979, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. विनोद रस्तोगी के नाट्य साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन : 1979, उमेश प्रकाशन, दिल्ली।
7. जैनेंद्र के निबंधों का साहित्यिक और तात्त्विक अध्ययन : 1980, अंतरदेशीय प्रकाशन, आगरा।
8. धनानंद : 1984-85, ज्ञानबुक डेपो, मेरठ।
9. आधुनिक हिंदी कविता और विचार : 1987, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
10. काव्यसूर मणी : 1990, उमेश प्रकाशन, दिल्ली।
11. धनानंद : एक अध्ययन : 1991, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
12. कबीर : 1992, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
13. प्रसाद साहित्य : अनुशीलन : 1993, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
14. सूरदास : 1995, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।
15. मीराबाई : 1996, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली।

2.2.9 विचार साहित्य :

इसके अंतर्गत उनकी लगभग पैतीस पुस्तकें आती हैं -अवधूत लोहिया, डॉ. अम्बेडकर का जीवन मर्म, भारतीय काँग्रेस : तब और अब, बलात्कार क्यों, दंगों का झूठा सच, अब बहुएँ नहीं जलेगी, शिक्षा और लोकतंत्र, आधुनिक शिक्षा : मनोविज्ञान, लोहिया : व्यक्तित्व और कृतित्व, सामत्येकी, अनौपचारिक शिक्षा : सिद्धांत और व्यवहार, बुनियादी शिक्षा की रूपरेखा, क्रांतिकारी लोहिया, राष्ट्रभाषा और हिंदी, आजादी की पहली लढ़ाई, बहुएँ जल रही हैं, प्रियदर्शनी इंदिरा, स्वतंत्रता संग्राम की कहानी, शिक्षा मनन आदि।

2.2.10 बाल साहित्य :

बाल साहित्य की पुस्तकें हैं - कथा-काला ताजमहल, हरिया की डायरी, महाभारत, नीलम देश का राजकुमार, मोम की गुड़िया, नहले पर दहला, नारद का मोह, गाँव हँसे फ़सलें

मुस्काई, महागाँव, गौरा देवी, खुली खिड़की का मकान, रानी परचुनियाँ, जमादार गिरधारीलाल, दादी का फैसला, बच्चों के गांधी, कुत्ते की दुम, पिलपिली साहब, मंगत का सपना, साक्षर सरपंच, सुल्तानी पंचायत, पीले हाथ, अब न होगा कोई अछूत, हरा-भरा हिंदुस्थान, शहीद कन्याएँ, शिक्षक गांधी, शिक्षक महिलाएँ, खून दो : आजादी लो, इन्सान बनो, हंसा चला कौए की चाल, गांधी के तीन बंदर, नवाज साहब के नौकर ऐसे थे, हमारे सुभाष, जोरावर सिंह, भोर की किरण, चोरों का सर-दार, तूरिन की नूरजहाँ, बूँद-बूँद घट भरें आदि।

2.2.11 काव्य साहित्य :

प्रभूत मात्रा में लेखन करनेवाले डॉ. भटनागरजी ने काव्य के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा दिखाने का यत्न किया है।

साक्षी है अरावली (खण्डकाव्य), अधर प्रिया, गीतायन, अंजलीभर सुमन आदि काव्य संग्रहों के अलावा आपकी कई स्फुट कविताएँ समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं।

2.2.12 संपादन :

कथा कुसुम, कथा सौरभ, सप्त किरण, अधर प्रिया, गद्य मंजुषा आदि।

2.2.13 अनुवाद :

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी की कई रचनाओं का अंग्रेजी, फ्रेंच, मराठी, कन्नड, उड़िया आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

2.2.14 अन्य :

नीले घोड़े का सवार, ग़ज़ल आदि उपन्यासों पर टी. वी. सीरियल का निर्माण, रेडिओं से धारा प्रवाह नाटक प्रसारण, बाल हिंदी शब्दकोश, अम्बर हिंदी शब्दकोश का निर्माण आदि।

2.2.15 अंग्रेजी साहित्य :

1. A Girl on the Road, 2000, Roopam Prakashan, Delhi.
2. Subhash and Subhash, 2003, Indian Publishers and Distributors, Delhi.
3. Rape, 2003, Indian Publishers and Distributors, Delhi.

4. The Man of Destany, 2003, Indian Publishers and Distributors, Delhi.

5. August Revolution, 2005, Indian Publishers and Distributors, Delhi.

2.3 पुरस्कार :

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी को अनेक साहित्यिक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए है। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च मीरा पुरस्कार और विशिष्ट साहित्यकार सम्मान पुरस्कार, घनश्यामदास सर्वोच्य साहित्य पुरस्कार, महाराणा कुम्भा पुरस्कार, अखिल भारतीय समर स्मृति सम्मान पुरस्कार, साहित्य सम्मान पुरस्कार, नाहर सम्मान साहित्य पुरस्कार, साहित्य मंडल, नाथद्वारा (राजस्थान) का हिंदी भाषा भूषण सम्मान, डॉ. विद्या वाचस्पति (साहित्य) इ. अनेक प्रांतिय तथा राष्ट्रीय पुरस्कारों से वे सम्मानित तथा अलंकृत हैं।

निष्कर्ष :

जीवन के 77 वसंत देखने के बाद आज भी डॉ. भटनागर जी की लेखनी सृजनशील है। लौकिक जीवन में अनेक उपलब्धियाँ मिलने के बावजूद उनका दैनंदिन जीवन अत्यंत सादगी भरा है। उनकी सेवावृत्ति की भावना का परिचय मुझे उनके साक्षात्कार के समय मिला। उनकी धर्मपत्नी दीर्घ बिमारी की शिकार है। भटनागर जी उनकी हर संभव सेवा बालसुलभ मन से कर रहे हैं। उनके परिवेश में कही कोई दिखावट, शानोंशौकत का आभास नहीं मिलता। मुझे भटनागरजी एक सच्चे मानव भक्त के रूप में नजर आए।

डॉ. भटनागर जी के संपूर्ण व्यक्तित्त्व व कृतित्त्व का आकलन करने के बाद हम निम्न निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं -

1. वे मुख्य रूप से कथाकार हैं। कथा विधा में भी उपन्यास लिखने में उनका मन अधिक रमा है।
2. भटनागर जी अपनी रचनाओं द्वारा मानवता के मूक सेवक के रूप में हमारे सामने आते ह।
3. भटनागर जी साहित्य को सिर्फ कला नहीं मानते। उनके मुताबिक साहित्य को समाज के दर्पण के साथ-साथ समाज के शिक्षक की भूमिका भी अदा करनी चाहिए।

4. अपनी रचनाओं द्वारा उन्होंने मध्यवर्गीय समाज को पाठक के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

5. भारतीय संस्कृति एवं मानवीय जीवन मूल्यों के लिए वे विशेष रूप से चिन्तित दिखाई देते हैं। इसी कारणवश उनके साहित्य संसार में भारत-विश्व के महान आदर्श चरित्र अंकित हुए हैं।

6. उनका सृजन विषयवस्तु के भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिवेश में हुआ है। उन्होंने अनेकों यात्राएँ की हैं। जिनका चित्रण उन्हें अपने साहित्य में करना होता है, वे उन व्यक्तियों से मिलते हैं, चर्चा करते हैं। रचना से संबंधित व्यक्तियों के वक्तव्यों और विचारों का उपयोग वे अपने लेखन में करने की योजना रखते हैं।

7. भटनागर जी के साहित्य में समस्याओं के साथ-साथ उनका समाधान भी मिलता है।

8. डॉ. भटनागर जी सतत अध्ययनशील व कार्यरत रहनेवाले कर्मयोगी हैं।

9. उर्दू व अंग्रेजी पारिवारिक पृष्ठभूमि से आने के कारण उन पर भाषायी विशुद्धतावाद हावी नहीं है। इस मामले में वे कतई दुराग्रही नहीं हैं।

10. उनकी ज्यादातर किताबें बोलकर लिखाई गई हैं। वे विचार एवं लेखन समाधि में लीन रहते हैं। लिखने को वे सबसे ज्यादा इन्जाय[1] करते हैं।

भटनागर जी को प्रारंभ से भयावह परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। इन परिस्थितियों से उन्हें साहित्य ने ही निजात दिलाई है। साहित्य ही उनकी पूजा, अर्चना, सर्वस्व है। इसी से उन्हें आत्मसंवाद करने का अवसर मिलता हैं और वे अदृश्य को गहराई से अनुभव कर पाते हैं। उनका अधिकांश साहित्य उनकी अंदरूनी प्रेरणा का परिणाम है।

जीवन के 77 वसंत देख चुकने के बाद भी डॉ. भटनागर जी अपनी साहित्य सेवा के प्रति पूर्ण समर्पित है। वे एकदम सहजता से जीवन यापन करने वाले मौन साधक हैं। आज भी वो ज्यादातर अकेले रहना पसंद करते हैं। अपनी बीमार पत्नी की हर संभव सेवा में वे अपना सहयोग देते रहते है। उनमें किसी प्रकार का कोई अहंकार नहीं हैं। उनके इसी रूप-स्वभाव

---

1. Enjoy

ने मुझे जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोन के दर्शन कराए है। अत: मैं यही प्रार्थना करूँगा कि उनका जीवन हमेशा स्वस्थ एवं खुशहाल बना रहें और अपने सृजन से हमें लाभान्वित करते रहें।

अंत में यह कहना असमीचीन न होगा की डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर जी का जीवन एवं साहित्य अपने युग का एक ऐसा दस्तावेज है जो अतित के गौरव को वर्तमान में जीवित रखने का सुंदर एवं सफल प्रयास है।